

दिव्याभिमंक प्रैस्ट

वर्ष : 5, अंक : 24

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 5 फरवरी से 11 फरवरी 2020

पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

आर्थिक विकास से जुड़े पर्यावरण



यह हमारे ही हित में है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें। पर्यावरण को बचाए रखने में यदि हम सफल होंगे, तो आने वाली संतानों के लिए भी संसाधनों का उपयोग करने हेतु कुछ छोड़ जाएंगे। उद्योगों द्वारा फैलाए जा रहे कार्बन उत्सर्जन को न्यूनतम स्तर पर लाना आवश्यक है। सभी देशों को मिलकर इस कार्य में योगदान देना होगा। भारत भी जीवाशम ईंधन का उपयोग कम करने हेतु प्रयास कर रहा है। सौर ऊर्जा के उपयोग पर सरकार ध्यान दे रही है।

दूसरे विकसित एवं विकासशील देशों के बीच हितों का टकराव है। वर्ष 2000 में सहस्राब्दी विकास लक्ष्य एवं वर्ष 2015 में सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, जिन्हें वर्ष 2030 तक विश्व के सभी देशों को हासिल करना है। इस मोर्चे पर विकसित देशों के प्रयासों में कमी देखने में आ रही है।

आज यह तय होना जरूरी है कि विकसित देशों द्वारा विलासित संबंधी आवश्यकताओं हेतु प्रकृति के संसाधनों का कितना उपयोग किया जाए एवं विकासशील देशों द्वारा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का कितना इस्तेमाल किया जाए। अनेक देशों ने प्रकृति से

आज

विश्व में यह मंथन चल रहा है कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना किस प्रकार सतत आर्थिक विकास किया जाए। जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी, आर्थिक असमानता एवं भूख आदि समस्याएं आज विकटाल रूप धारण करती जा रही हैं। ऐसा कौन-सा तरीका है, जिससे विकास जारी रहे और पर्यावरण भी प्रभावित न हो?

अधिक तम
लिया है, पर अब

जब वापस करने की
जिम्मेदारी आई है, तो वे पीछे हट रहे हैं।

चीन, भारत, दक्षिण पूर्वी देशों एवं
अफ्रीका में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। फिर भी इन देशों में प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति खपत कम है। जबकि विकसित देशों में आबादी भले कम है, पर प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति खपत बहुत अधिक है।

ऐसे में, सिद्धांततः विकसित देशों को पर्यावरण में सुधार हेतु ज्यादा

योगदान

करना
चाहिए। पर

वे

ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, क्योंकि उनके यहां कल-कारखानों में इस संबंध में किए जाने वाले तकनीकी बदलाव पर बहुत अधिक खर्च होगा, जो वे करना नहीं चाहते। आर्थिक वृद्धि को नापने का हमारा नजरिया भी बदलना चाहिए।

सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के बजाय सतत एवं स्थिर विकास को आर्थिक विकास का पैमाना बनाया जाना चाहिए, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का

भंडार बरकरार रखा जा सके। साथ ही, रीसाइकिलिंग उद्योग को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। पूरी दुनिया में उपज का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद हो जाता है।

भारत में भी यही स्थिति है। इन फसलों को उगाने में बड़ी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन होता है, पानी का बहुत अधिक उपयोग होता है, परिवहन की लागत लगती है। अतः अनाज और खाद्य पदार्थों की बर्बादी रोकना भी पर्यावरण संरक्षण का काम है।

अपने यहां भू-क्षरण भी एक बड़ी समस्या है। इससे सकल घरेलू उत्पाद में 2.5 प्रतिशत की कमी हो जाती है। इससे फसल के अंदर पौष्टिक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। घास उगाकर, पेड़ लगाकर, झाड़ियां उगाकर यह क्षरण रोका जा सकता है। उर्वरकों का इस्तेमाल खत्म करना जरूरी है।

नीति आयोग ने एक सतत विकास इंडेक्स तैयार किया है, जिसमें 17 बिंदु रखे गए हैं। इनके आधार पर समस्त राज्यों की सालाना रैंकिंग तय की जाती है। इससे भी देश के सभी राज्यों में पर्यावरण सुधार हेतु आपस में प्रतियोगिता की भावना पैदा हो रही है।

पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा फिर नोबेल पुरस्कार के लिए नामित

कोपेनहेगन। जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसे वैश्विक संकट के खिलाफ पुरजोर आवाज उठाने वाली 17 वर्षीय ग्रेटा थनबर्ग को फिर नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। इस वर्ष ग्रेटा का नाम उनके देश स्वीडन के दो सांसदों ने आगे बढ़ाया है। उनका कहना है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए दुनियाभर के राजनेताओं को झकझोरने का ग्रेटा का प्रयास वैश्विक स्तर पर शांति स्थापना की कोशिश जैसा है। पिछले साल नॉर्वे की संसद के तीन सदस्यों ने ग्रेटा को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया था।



पिछले साल ग्रेटा उस समय अंतर्राष्ट्रीय पटल पर उभरी थीं, जब कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने को लेकर फिलाई बरते जाने पर उन्होंने संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में अमेरिका समेत वैश्विक ताकतों की जमकर खिंचाई की थी। सजग पर्यावरण कार्यकर्ता के तौर पर मशहूर ग्रेटा फिलहाल पेरिस जलवायु समझौता लागू कराने को लेकर पूरी तरह समर्पित हैं। ग्रेटा कई देशों में जागरूकता अभियान चला रही है। इससे प्रेरित होकर विभिन्न देशों के युवा अपनी सरकार से पर्यावरण केंद्रित कदम उठाने की मांग करने लगे हैं।

उल्लेखनीय है कि बीते दिनों दावोंस में आयोजित वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में 17 साल की ग्रेटा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सिर्फ पेड़ लगाना पर्याप्त नहीं है। उनके निशाने पर सीधे तौर पर ट्रंप का भाषण था, जिसमें उन्होंने एक लाख करोड़ पेड़ लगाने की बात कही थी। ट्रंप ने इस फोरम को संबोधित करते हुए जलवायु परिवर्तन पर की जा रही भविष्यवाणियों को खारिज किया था। ट्रंप ने जलवायु परिवर्तन कार्यकर्ताओं को मूर्ख ज्योतिषियों का उत्तराधिकारी भी करार दिया।

थनबर्ग ने अपने भाषण में एक साल पहले डब्ल्यूईएफ में दिए गए भाषण की टिप्पणियों को दोहाराते हुए कहा था कि हमारे घरों में आग लगी हुई है और आपकी निष्क्रियता आग की लपटों को हवा दे रही है। ग्रेटा ने कहा, आप कहते हैं कि बच्चों को चिंता नहीं करनी चाहिए। इतना निराशावादी मत बनिए। पिछले साल भी वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के मंच पर ही दोनों आमने-सामने आ गए थे। तब ग्रेटा थनबर्ग की डोनाल्ड ट्रंप को घूरते हुए तस्वीर वायरल हो गई थी। ग्रेटा ने ट्रंप पर निशाना साधते हुए कहा था कि पेड़ लगाना निश्चित रूप से अच्छा कदम है लेकिन जलवायु परिवर्तन के लिए जो काम किए जाने चाहिए थे, उसके मुकाबले यह प्रयास पर्याप्त नहीं है।

पर्यावरण के बदलाव से कर रहे पलायन

कई दशकों से पिंजौर गार्डन के एंट्री गेट के सामने विशाल पेड़ों पर अपनी कालोनियां बना कर रहने वाली हजारों विशाल चमगादड़ों आजकल पेड़ों से लगभग गायब हो चुकी हैं। पहले इन पेड़ों पर विशाल गिर्दों का भी बसेरा था लेकिन अब वो लगभग लुस हो चुकी हैं इसलिए पिंजौर क्षेत्र से चमगादड़ों का कम होना भी पर्यावरण प्रेमियों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। माना जा रहा है कि इन पर मौसम के बदलाव या पर्यावरण में बदलाव का प्रभाव पड़ा है जो यहां से पलायन कर रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार

इस प्रजाति के लिए यह किसी खतरे का संकेत है। गार्डन के बाहर शौचालय, दुकानें तोड़ी थी साथ ही यहां ऊंचे-ऊंचे कई पेड़ भी काटे गए थे जिन पर चमगादड़ों का बसेरा था। दिन में चमगादड़ों पेड़ों पर शोर करती नजर आती थी शाम होते ही यह खाने के लिए पंचकूला, चंडीगढ़, अंबला तक का सफर करती थी। चमगादड़ों का सबसे बड़ा ज़ुँड़ पिंजौर गार्डन में ही था क्योंकि गार्डन में उनका भोजन फलों, फूलों का स्रोत पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं। टूरिज्म विभाग मंडल अधिकारी सुनीत शर्मा ने बताया कि गार्डन में चमगादड़ की संख्या कम नहीं हुई है बल्कि इन्होंने बाहर की बजाय गार्डन के अंदर, मोटल के सामने के पेड़ों में बसेरा बना लिया है।

उन्होंने बताया यह गार्डन के पेड़ों के फलों को भारी संख्या में नुकसान पहुंचाती हैं साथ ही जगह-जगह बीट कर दीवारों, फर्श को भी गंदा करती हैं। वन्य प्राणी विभाग पिंजौर मंडल सब इंस्पेक्टर रामकेश ने बताया कुछ समय से उनके पास पंचकूला में तारों, पेड़ों, घरों के पास चमगादड़ लटके होने की शिकायतें बढ़ी हैं पहले इनी बड़ी संख्या में शिकायतें नहीं आई हो सकता है संभवतः यहां से ये पलायन कर रही हों वह गार्डन जाकर



बनाता है। लोमड़ी की तरह इसके कान नुकीले, नाक काली पतली लंबी शरीर में लाल भूरे रंग का फर होता है इसलिए इसे ग्रेट ईंडियन फ्लाईंग फॉक्स भी कहते हैं इसकी बड़ी आंखें इसे बेहतरीन विजन देती हैं इसलिए रात के समय यह छोटी चमगादड़ की तरह ध्वनि तरंगों यानी इको लोकेशन द्वारा अपना रास्ता नहीं ढूँढती बल्कि खाना, रास्ता ढूँडने के लिए अपनी बढ़िया दृष्टि और गंध पर निर्भर करती है। निशाचर प्राणी चमगादड़ अपने पंखों को अपने शरीर के चारों ओर लपेट कर खुद को गर्म रखकर सर्दी में अपनी सुरक्षा करती है और गर्भियों में इन्हीं पंखों को हवा में लहराकर शरीर का तापमान कम करती है। चमगादड़ अपने शक्तिशाली पंखों द्वारा उल्टा लटक कर सोते हैं जिसके तेज पंखों से पेड़ की छाल क्षतिग्रस्त हो सकती है।

हर दस साल में 0.33 डिग्री सेंटीग्रेड गर्म हो रही है नदियां



एक शोध में पता चला है कि नदियों का तापमान लगातार बढ़ रहा है। यह स्थिति पारिस्थितिकी प्रणालियों के लिए खतरे की चंटी है। यह शोध स्विट्जरलैंड के ईपीएफएल और स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट फॉर फरेस्ट, स्नो एंड लैंडस्केप रिसर्च (डब्ल्यूएसएल) के शोधकर्ताओं ने किया है। यह अध्ययन जर्नल हाइड्रोलॉजी एंड अर्थ सिस्टम साइंसेज में प्रकाशित हुआ है।

लंबे समय से बर्फ और लेशियरों से पिछले पानी ने दुनिया भर की नदियों को गर्म

गई है। इसी कड़ी में यदि स्विट्जरलैंड का उदाहरण लें तो 2018 में स्विस संरक्षणवादियों ने मछलीयों को गर्मी, पानी के कमी से बचाने, हेतु कई उपयोग करने पढ़े। टीम ने स्विट्जरलैंड भर में नदी के तापमान और नदी के बहाव के रुझानों का विश्लेषण किया। जिसमें दो डेटा सेटों का उपयोग किया गया- 1979 में 33 नदी साइटों से माप को रिकॉर्ड किया गया, और 1999 के बाद 52 साइटों से माप को रिकॉर्ड किया। उन्होंने पाया कि नदी का पानी 1980 के बाद से हर दशक

में औसत 0.33 डिग्री सेंटीग्रेड गर्म हो रहा है, और पिछले 20 वर्षों में 0.37 डिग्री सेंटीग्रेड प्रति दशक की दर से गर्म हुआ। कायोस लैब में डॉक्टरेट सहायक और प्रमुख शोधकर्ता एंड्रियन मिशेल कहते हैं कि, हमें यह जानकर आश्वर्य हुआ कि स्विस नदियां आसपास की हवा की दर से 95 प्रतिशत तक गर्म हो रही हैं। उन्होंने आगे जोड़े हुए कहा कि, पारंपरिक ज्ञान यह था कि बर्फ और ग्लेशियरों से पिछला हुआ पानी जब ज़मीलों में बहता था तो पानी गर्म नहीं होता था। क्योंकि स्विस पठार उस पर पड़ने वाले गर्म हवा के प्रभाव को रोक दिया करते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। शोधकर्ताओं ने पिछले 40 वर्षों में पानी के बहाव में 3 प्रतिशत की कमी देखी है, और पिछले दो दशकों में 10 प्रतिशत की कमी हुई है। यदि यही दौर जारी रहता है, तो पानी की कमी के कारण नदियों और जलधाराओं में गर्मी में तापमान और अधिक बढ़ सकता है, यह स्थिति और भी गंभीर हो जाएगी जब हिमनदी (ग्लैशल) पूरी तरह से पिछल जाएंगे।



मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के ओबेदुल्लागंज से देव एवं रजत ने जीता स्वर्ण ए वैदेही ए प्रांजल को रजत

ओबेदुल्लागंज। 10 सब जूनियर ए द्वितीय थ्रथ नेशनल ड्रॉप रोबॉल चैंपियनशिप एवं 8 फेडेरेशन कप प्रतियोगिता 30 जनवरी से 2 फरवरी 2020। सबका मालिक एक साईं बाबा के शहर शिर्डी महाराष्ट्र में आयोजित की गई।

इस प्रतियोगिता में नगर

के ग्लोबल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस के छात्रों ने देवनगर, रजत यादव, वैदेही नागर, प्रांजल चौहान, पुष्कर यादव एवं कोच शुभम यादव के मार्गदर्शन में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए बालक वर्ग में सब जूनियर सुपर इंवेंट के फाइनल मुकाबले में हिमाचल प्रदेश को (3-1)

से हराया। इसमें रजत एवं देवनगर ने स्वर्ण पदक जीता। प्रांजल चौहान ने सब जूनियर के डबल्स मुकाबले में रजत पदक जीता, वहीं बालिका वर्ग में वैदेही नगर ने सब जूनियर के सुपर इंवेंट में रजत पदक जीता। सभी खिलाड़ियों को ग्लोबल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस की डायरेक्टर

जलवायु परिवर्तन से किसानों के बीच बढ़ सकते हैं हिंसक घटनाएं

नोट्रे डेम विश्वविद्यालय के नए शोध में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन की वजह से यदि खेती में दिक्कते पैदा होंगी तो इस वजह से किसानों के बीच हिंसक संघर्ष तक हो सकते हैं। प्रोसिंग्स ऑफ द नेशनल अकादमी ऑफ साइंसेज प्रतिका में प्रकाशित इस अध्ययन में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन से बाढ़, सूखे जैसे हालात बढ़ेगे, जिससे किसानों की आमदनी प्रभावित होगी, इससे उनके बीच झड़पें तक हो सकती हैं।

अमेरिका के नोट्रे डेम विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के सहायक प्रोफेसर और प्रमुख अध्ययनकर्ता मिसेले मुलर-इटेन ने कहा कि वैज्ञानिकों ने इस बात पर सर्वसम्मति जताई है कि जलवायु परिवर्तन से दुनिया के कई क्षेत्रों में अधिक सूखा पड़ेगा। जो ऐसे हालात पैदा कर सकता है कि उससे समुदायों के बीच झगड़े तक हो सकते हैं।

अध्ययनकर्ता मुलर-इटेन और उनकी टीम ने शैलीगत सेंद्रियिक मॉडल पर विचार किया कि वर्षा में होने वाले बदलाव किसानों के दो समूह कैसे प्रभावित होते हैं। पानी की कमी के



कारण आपस संघर्ष बढ़ता है। इससे किसानों की लागत बढ़ती है और पैदावार कम होती है, जो आपस में झगड़ों को जन्म देता है।

नोट्रे डेम के पर्यावरण परिवर्तन पहल के सहयोगी निदेशक और सह-अध्ययनकर्ता डायगो बोल्स्टर ने कहा कि कई लोगों को लगता है कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव का मतलब कठोर परिस्थितियों से है। जिससे लागतार जुझना, लड़ना पड़ेगा। लेकिन जलवायु परिवर्तन का मतलब कुल मिलाकर संसाधनों की कमी से भी है और यह संसाधनों को हासिल करने के लिए लोगों को जु़ज़ने के लिए मजबूर करती हैं।

उदाहरण के लिए, बारिश न होने के कारण किसानों की पैदावार प्रभावित होगी तो अधिक बारिश की वजह से बाढ़ आ सकती है और फसल को सुलझाने का एक तरीका प्रदान करती है।

नुकसान हो सकता है। इससे किसानों के परिवारों को खाने पीने की कमी हो सकती है।

यह अध्ययन इस बात पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है कि जलवायु परिवर्तन संघर्ष का एक महत्वपूर्ण कारण है। इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि उम्मीदें और अनुकूलन (ऐडप्टेशन) अनुमानित परिणामों को बदल सकते हैं।

मुलर-इटेन ने कहा कि यहां ऐसे कई तंत्र हैं जो पानी की उपलब्धता और संघर्ष के बीच पिछले संबंध को समझा सकते हैं। राजनेताओं के लिए केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि पानी और संघर्ष का संबंध है। प्रभावी नीति बनाने के लिए उन्हें इनके बीच के संबंध को समझने की आवश्यकता है। हमारे पूर्वानुमान संभावित स्पष्टीकरणों को कैसे प्रभावित कर सकता है।

किसानों का दम घोंट रहा है केमिकल खाद से निकलने वाला अतिरिक्त सेलेनियम

शोधकर्ताओं के अनुसार कीटनाशकों और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से निकलने वाला सेलेनियम वायु को प्रदूषित कर रहा है। जिसके कारण फेफड़े का कैंसर, अस्थमा और टाइप 2 मधुमेह जैसी बीमारियां हो सकती हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया द्वारा किया गया यह अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय जर्नल एनवायरनमेंटल साइंस एंड टेक्नोलॉजी में प्रकाशित किया गया है। जिसमें सेलेनियम युक्त एरोसोल और उसकी संरचना के बारे में बताया गया है। साथ ही यह कण किस तरह हमारे फेफड़ों और स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है, इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है। यूसीआर में एटमॉस्फेरिक साइंस विषय की एसोसिएट प्रोफेसर और इस अध्ययन से जुड़ी रोया बहरीनी ने बताया कि यह एरोसाइट्स ऐसी किसी भी जगह हो सकते हैं, जहां मिट्टी में सेलेनियम की मात्रा अधिक हो। यही बजह है कि इससे किसानों को सबसे ज्यादा खतरा है। वहीं प्रदूषित मिट्टी और खेतों के पास रहने वाले लोग भी इसके चलते बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। आमतौर पर पर्यावरण में प्राकृतिक रूप से भी सेलेनियम पाया जाता है। लेकिन मानव निर्मित स्रोतों जैसे कीटनाशकों से निकला अतिरिक्त सेलेनियम भी मिट्टी द्वारा साख लिया जाता है। जो पौधों में पहुंच जाता है। एक बार उत्सर्जित होने के बाद यह सेलेनियम युक्त वाष्ण एरोसोल में बदल जाती है। जिसमें डाइमिथाइल सेलेनाइड के साथ-साथ वायु में मौजूद अन्य केमिकल होते हैं। यह एरोसोल करीब एक सप्ताह तक हवा में रह सकते हैं। सामान्यतः हमारे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए सेलेनियम की थोड़ी मात्रा जरूरी है। जिसकी कमी से थायराइड हो सकता है और हड्डियों का विकास प्रभावित हो सकता है। लेकिन जैसे की हर चीज की अति नुकसानदायक होती है। उसी प्रकार फेफड़ों में सूजन आ सकती है। साथ ही सांस की समस्या और पेट एवं आंत संबंधी विकार, बालों का झड़ना और मानसिक आघात जैसी बीमारियां हो सकती हैं। हालांकि सेलेनियम युक्त एरोसोल में नुकसान पर क्या प्रभाव डालते हैं, यह पूरी तरह साफ नहीं था। इसी को समझने के लिए शोधकर्ताओं ने प्रयोगशाला में इन एयरोसोल को बना कर उसपर अध्ययन किया है। इससे पहले चूहे पर किये गए अध्ययन में भी यह बात सामने आयी थी कि फेफड़ों में सूजन पैदा करने के साथ-साथ उन्हें नुकसान भी पहुंचा सकता है। यूसीआर में एनवायरनमेंटल टॉक्सिकोलॉजी के सहायक प्रोफेसर शिंग-हसन ने बताया कि यह नवीनतम अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि डायमिथाइल सेलेनाइड से एरोसोल कैसे बनते हैं और यह इंसानों को कैसे प्रभावित कर सकता है।



वायुमंडल को प्रदूषित कर रही हैं लाल सागर से निकलने वाली गैसें

एक अध्ययन में खुलासा हुआ है कि लाल सागर के नीचे से निकलने वाली हाइड्रोकार्बन गैसें कुछ बढ़े जीवाशम ईंधन (फार्सिल पट्टल) नियांतक देशों के उत्सर्जन के बराबर की दर से वायुमंडल को प्रदूषित कर रही हैं।

पानी में इन गैसों का रिसाव मिस्र, इज़राइल, जॉर्डन और सऊदी अरब सहित कई देशों के रिसाव्स और बंदरगाहों से हो रहा है। ये गैसें औद्योगिक शिपिंग से होने वाले उत्सर्जन के साथ घुल जाती हैं और वे प्रदूषण में बदल जाती हैं। जो इंसानों के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हैं।

मिडिल ईस्ट में दुनिया के आधे से अधिक तेल और गैस भंडार हैं। वहां तेजी से जीवाशम ईंधन का दोहन होता है, जिसके कारण इस क्षेत्र से भारी मात्रा में गैसीय प्रदूषक वायुमंडल में फैल जाते हैं। यह अध्ययन नेचर कम्प्युनिकेशन्स नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

अपने अध्ययन के दौरान 2017 में खाड़ी के आसपास, मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर केमिस्ट्री के शोधकर्ताओं ने देखा कि उत्तरी लाल सागर के ऊपर हवा में ईथन और प्रोपेन का स्तर अनुमान से 40 गुना अधिक था।

टीम ने गैस उत्सर्जन के लिए संभावित गैसों का विश्लेषण किया, जिसमें

**अध्ययन के अनुसार यह
वायुमंडलीय मीथेन का एक अन्य स्रोत है, जो ग्रीनहाउस गैस की दर को सबसे अधिक बढ़ा रहा है। पृथ्वी के सबसे व्यस्त परिवहन मार्ग में से एक, उत्तरी लाल सागर से गुजरने वाले शिपिंग कंटेनरों की बड़ी संख्या के कारण नाइट्रस ऑक्साइड प्रदूषण बहुत बढ़ गया है।**

यातायात, कृषि, बायोमास को जलाना और हाइड्रोकार्बन से बिजली उत्पादन शामिल है। उन्होंने पाया कि गैस और तेल के रिजर्वायर से गैसें समुद्र तल में रिस रही थीं। इन गैसों को समुद्र की लहरों द्वारा सतह पर ले जाया जाता है, जहां वे एक और ग्रीनहाउस गैस, औद्योगिक शिपिंग द्वारा उच्च मात्रा में उत्सर्जित नाइट्रस प्रदूषण बहुत बढ़ गया।

ऑक्साइड के साथ मिलते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, ये गैसीय औद्योगिक मानव स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक हैं।

शोधकर्ताओं ने कहा कि हमने इस डेटासेट पर काम करने में लगभग दो साल बिताए, ताकि यह साबित हो सके कि उत्सर्जन समुद्र की सतह से करीब दो किलोमीटर नीचे से हो रहा है।

टीम ने गणना की कि कई हाइड्रोकार्बन नियांतक देशों, जैसे संयुक्त अरब अमीरात या कुवैत में ईथेन और प्रोपेन रिसाव की दर काफी अधिक थी।

अध्ययन के अनुसार यह वायुमंडलीय मीथेन का एक अन्य स्रोत है, जो ग्रीनहाउस गैस की दर को सबसे अधिक बढ़ा रहा है। पृथ्वी के सबसे व्यस्त परिवहन मार्ग में से एक, उत्तरी लाल सागर से गुजरने वाले शिपिंग कंटेनरों की बड़ी संख्या के कारण नाइट्रस ऑक्साइड प्रदूषण बहुत बढ़ गया।

बोर्सोकिडिस ने कहा कि आने वाले दशकों में लाल सागर और स्वेज़ नहर के माध्यम से जहाजों के यातायात में वृद्धि जारी रहने की उम्मीद है, जिससे नाइट्रोजन ऑक्साइड के उत्सर्जन में वृद्धि के आसार हैं। उत्सर्जन बढ़ने से क्षेत्रीय हवा की गुणवत्ता में काफी गिरावट आएगी।